|| अर्हं नमः ||

आत्मकथा

ADVENTURE SERIES

સીમંધર

युगप्रधानाचार्यसम प.पू.चन्द्रशेखर वि.म.सा.

समर्पण

उन सभी को, जो अभिग्रह लेते है...

उन सभी को, जो अभिग्रह पालते है...

उन सभी को, जो अभिग्रह से जुडी
घनघोर आपत्तिओ में भी डटे रहते है...

उन सभी को, जो जिनशासन
की सीमा को धारण करते है

मु.गुणहंस वि.म.सा.
दि:09.04.2018
गुजराजी वाडी, चेन्नई
6.20 p.m

तत्व Twilight Series

जिनशासन में ENTRY PASS

महोत्सव या मोहोत्सव

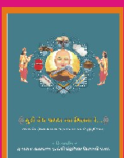
मुझे वेष श्रमण का मिलना रे..

अमृतवेल

The Way of
Legal Murder

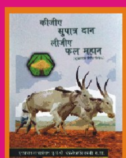

सुपात्रदान

दिव्य आशीर्वाद

सच्चारित्र चुडामणि कर्म साहित्य निष्णांत सिद्धांतमहोदधि
पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. एवं उन के विनेय
युगप्रधानाचार्यसम शासन प्रभावक गुरुदेव प.पू.श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

* निश्रादाता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.
सरलस्वभावी प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

Copies - 2,000

अनुवादक

उत्तमाराधक शा थानमलजी (जावाल)

* प्रकाशक *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
102-ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ओफिस के सामने, भट्ठा, पालडी, अहमदाबाद - 7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश जैन
373, Mint Street, Rajendra Complex,
(Near Mahashakthi Hotel)
Chennai - 600 079. Ph: 9841067888

मनोज जैन
Shree Adinath Enterprises
7, Perumal Mudali Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9840398344

पीयुष जैन
Sri Divyam
122, Anna Pillai Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9884232891

Design and Printed by:

Shri Divyam imagination alive
Chennai. Ph : 044-49580318
9884232891/8148836497

प्रस्तावना

अर्हं नमः

सीमरन !

हिन्दी पीक्चर में हीरोइन का नाम....

सीमंधरा !

महाविदेह के भगवान का नाम ....

सीमरन नामवाली एक २२ साल की युवती

सीमंधरा नाम के लायक कैसे बनी ?

आत्मा अपनी पूर्वभव की साधना - आराधना को लेकर आता है, यहाँ अच्छे निमित्त मील जाए, तो वो वापस अपनी पूर्वजन्म की आराधना को प्राप्त कर लेता है।

यह सत्य जानो इस आत्मकथा में ! .

युगप्रधानाचार्यसम पूज्य पंन्यास
चन्द्रशेखर विजयजी के शिष्य
गुणहंस विजय

''अभी बहनो में चढावे बोले जाएँगे। मुमुक्षु को कपडा वहोराने का चढावा आराधना में बोला जा रहा है। बोलो कौन चढावा बोल रहा है?

सबसे कम जोडी कपडे पहनने वाले को यह लाभ मिलेगा।'' खतरगच्छ के श्रावक मनोज भाई बहनो को समझा रहे थे। ता. 21.1.2018 रविवार का दिन!

चेन्नई के चुलै जैन संघ के निकट ही जय जिनेन्द्र अेपार्टमेंट में मुमुक्षु नीत कुमार की दीक्षा तय हुई थी। अपार्टमेंट में एक छोटा Flat होने से हम दस साधु पीछे की तरफ मरलेचा गार्डन नाम के स्थानकवासीयों की बडी डॉम वाली जगह में उतरे थे। हमारा रहेठाण एक बंगले में था और 1000 लोग आराम से बैठ सके ऐसे विशाल डॉम में दीक्षा का प्रोग्राम रखा गया था।

कार्यक्रम तीन दिन का था।

ता. 20 शनिवार को - शोभायात्रा (वरघोडा) वर्षीदान और शाम को अठारह पापस्थानक की संवेदना.....

ता. 21 रविवार को - 9 से 12 उपकरणों के चढावे, स्वामीभक्ति और रात को विदाई कार्यक्रम...

ता. 22 सोमवार को - सुबह दीक्षा, उसके बाद नवकारसी....

ज्यादा खर्च दीक्षार्थी परिवार को करना पडे यह मुझे पसंद नहीं है। इसलिए मैंने कम से कम खर्च करवाया। रविवार दोपहर को स्वामी भक्ति में सिर्फ चार वस्तु-दाल-बाटी-चुरमा और राम खिचडी! और सोमवार को दीक्षा के बाद की भक्ति में सिर्फ छ वस्तु-खाखरा, मुँग, शीरा, पापडी, उपमा, दूध (चाय नही)।

पैसा लेनेवाले संगीतकार व एन्करों को नहीं बुलाया था। गानेवाले और बोलनेवाले की फीस जिरो ही थी। Artist का खर्च हुआ। कुल दीक्षा प्रोग्राम का खर्च साढे चार लाख हुआ था।

इस वक्त प्रोग्राम में कुछ नया बदलाव किया......

1. उपकरण के चढावे दीक्षा के दिन बुलवाने के बदले दीक्षा के एक दिन पहले किये। जब दीक्षार्थी स्नान के लिये जा रहे हो, तब चढावे बोले जाते है। लेकिन उसमे कई लोग चढावे में रस नहीं होने से एक आधे घंटे के लिये बाहर चले जाते है या फिर बाते करते है। इसके बदले इस समय में अगर दीक्षा का महत्व और महिमा-प्रवचन का कार्यक्रम रखे, तो सभी लोग इसमे सुनने के लिए बैठे रहेंगे और बाद में नूतन दीक्षार्थी को देखकर ज्यादा भावनाशील होंगे।

दीक्षा में कई लोग ऐसे होते है जो कभी प्रवचन सुनने के लिए नहीं जाते, पर्युषण में भी नहीं। सिर्फ दीक्षा में संबंधी होने से शिष्टाचार निभाने के लिए ही आते है। ऐसे लोगों को अगर इस समय घंटे-आधे घंटे के लिए भी धार्मिक प्रवचन सुनने को मिले, तो उनमे मोक्ष का बीज बोया जा सकता है।

इसलिए इस दीक्षा प्रसंग पर कोई भी दूसरा फंड करने का उपदेश देना नही चाहिए। सिर्फ दीक्षा संबंधी ही उपदेश देना अतिशय जरूरी है। इसलिए हमने २२ के दीक्षा दिन के बदले २१ को ९ से १२ बजे तक सिर्फ उपकरण के चढावे ही रखे।

इसमे भी सिर्फ चढावे ही हो तो किसी को भी रस ना आए और इसलिए कार्यक्रम को ज्ञानमय बनाने के लिए नई विचारधारा रखी।

1. एक के बाद एक उपकरण पर समझाना कि *'इन उपकरणों का साधु जीवन में क्या उपयोग है।'* इससे श्रोताओं को सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो और श्रद्धा भी उत्पन्न हो।

2. इसके बाद एक एक उपकरण के चढावे बोलने।

3. हर उपकरण का चढावा दो तरह से बोलना–पैसे से और आराधना से।

4.जो पैसों से चढावा ले, उसमें से कोई भी दो व्यक्ति और जो आराधना से चढावा ले, उसमे सिर्फ आराधक ही खुद–इस तरह कुल चार व्यक्ति एक साथ कल यह उपकरण हमे वहोराएंगे और दीक्षार्थी कई सालों तक इन उपकरणों का उपयोग करेगा।

इसके पीछे मुख्य कारण यह था कि–

पैसों की उपज हो तो यह रकम वैयावच्चादि में उपयोगी बनेगी। इसलिए चढावे रूपयो में बुलवाने चालु ही रखे।

5. हजारों लोग ऐसे होते है कि जिनमे पैसों से चढावे बोलने की शक्ति नहीं होती है और दीक्षा के प्रति बहुत राग होने पर भी कतिपय कारण वश दीक्षा भी नहीं ले सकते है। उनके मन में यह भावना होती है कि 'हमे भी उपकरण वहोराने का लाभ मिले।' पर पैसों की शक्ति नहीं होने से यह लाभ नहीं ले सकते। अगर आराधना द्वारा चढावे बोले जाये, तो वे लोग भी लाभ ले सकते है। इसलिए पैसे के अलावा आराधना द्वारा चढावा बोलने का तय किया।

6.आराधना द्वारा भी चढावे एक नहीं, बल्कि २ रखे गए। क्योंकि ज्यादातर आराधना द्वारा चढावे बहने ही लेती है। इसमे पुरुषों का नंबर शायद नहीं भी लगे। इसलिए एक चढावा भाईयों और एक चढावा बहनों के लिए रखा गया।

इस तरह हर एक उपकरण का चढावा तीन बार बुलवाने का तय किया गया। रूपयो में एक चढावा, आराधना में एक चढावा भाईयों में और एक चढावा बहनों में! रूपयो से चढावे बोलनेवालों में दो व्यक्ति और आराधना वाले एक पुरुष और एक महिला, इस तरह कुल चार व्यक्ति ही उपकरण वहोराने के लिए आये, जिससे स्टेज पर भीड भी न हो और वक्त भी ज्यादा न लगे।

कांबली हो या पात्रा हो वहोराने के लिए सिर्फ उपर कहे गए चार व्यक्ति ही हो!

इस तरह की व्यवस्था की वजह से लोगों में काफी उत्साह दिख रहा था। *'हम भी वहोराने का लाभ ले सकेंगे।'* इस विचार से उनके मुख पर प्रसन्नता के भाव दिख रहे थे। इस तरह कपडे का चढावा रूपयो से और आराधना द्वारा भाईयों में हो गया। अब बहनों को आह्वान किया गया, क्योकि बहनों को कपडो का बहुत शौख होता है। प्राय: हर बहनों के पास कम से कम ५० जोड कपडे होते ही है और उसमे भी राजस्थानी बहनों में कपडो का शौख कुछ ज्यादा ही है।

''४५ जोड'' एक बहन ने कहा....

''३५ जोड'' दूसरी बहन ने कहा....

''१५ जोड'' तीसरी बहन ने कहा....

''१० जोड'' बहनों के लिए आश्चर्य जनक चढावा बढ रहा था।

''७ जोड'' एक बहन बोली। सभी ने ताज्जुब से उसकी तरफ देखा। ''७ जोड एक बार... दो बार... आदेश दिया जा रहा है... तीन बार... बोलो, महावीर स्वामी की जय!'' कह कर मनोज भाई ने जय बुलवाकर चढावा पूर्ण किया।

मनोज भाई ने कहा ''लाभार्थी बहन खडे होकर संघ को दर्शन दें और अपना नाम लिखवाएं...'' और सभी के आश्चर्य के बीच सिर्फ 22 वर्ष की उम्र वाले युवान बहन खडे हुए। सभी लोग भावपूर्ण नजर से उसकी तरफ देख कर यह सोच रहे थे कि, *'इस उम्र में नए जमाने की लडकीयाँ मौज में मग्न रहती है, तो इसने यह कठिन प्रतिज्ञा किस तरह ली?'*

एक वर्ष में सिर्फ 7 जोड वस्त्र ही पहनने थे और उसमे से अगर कभी एक जोड फट जाए तो दूसरी जोडी लेने की छुट दी थी। लेकिन बहनो के लिए यह प्रतिज्ञा बहुत ही कठिन थी। अगर यह

प्रतिज्ञा आसान होती तो सभा में करीब तीन सौ के आसपास महिलाएँ बैठी हुई थी। लेकिन उनमे से किसी ने यह तैयारी नहीं बताई थी।

बहुत भाव पूर्वक मैंने और संघ ने उनकी अनुमोदना की।

''तुम्हारा नाम क्या है बहन?'' मनोज भाई ने पूछा। एकदम सौम्यभाव से उस बहन ने अपना नाम कहाँ ''सीमरन...''

सभी को यह नाम विचित्र लगा और मुझे भी... लेकिन अब नाम का कोई महत्व नही था। मैंने सोचा, *''शायद कोई मुमुक्षु बहन होगी और दीक्षा की भावना होगी। तभी तो ऐसी कठिन प्रतिज्ञा ली है। ...''* लेकिन बाद में मुझे यह सब जानने की उत्सुक्ता नहीं हुई।

ता. 22 जनवरी की दीक्षा हो गई। ऐसे तो हम विहार करने वाले थे, लेकिन नूतन दीक्षार्थी के जोग के लिए यहाँ आयंबिल खाते में निर्दोष गोचरी की अनुकूलता थी और मुनि तीर्थरक्षित विजयजी के तबियत के हिसाब से भी यहाँ रहना जरुरी था। इसलिये हमने यही रहने का निर्णय लिया और जय जिनेन्द्र एपार्टमेंट के पहले माले के Flat उपाश्रय में प्रवचन चालु रखे। प्रवचन में 70-80 लोग आते (मेरा पुण्य तो भाई बस इतना ही है)।

हाँ! जो भी आते वे लोग जिज्ञासु और शुभ परिणाम वाले ही थे। युवान भाई भी आते और बहने भी 40-45 उम्र की ज्यादा आती, लेकिन सभी लोग शादीशुदा ही आते।

सिर्फ एक ही व्यक्ति ऐसी थी जिसकी शादी नहीं हुई थी। उस बहन का नाम था सीमरन बहन! हमेशा प्रवचन में 9.15 बजे आ जाना, बहुत ही उल्लास से प्रवचन सुनना यह सभी गुण उन बहन में दिखाई दिए।

एक दिन सहज ही व्याख्यान में बाते निकली कि 'न्यु जनरेशन

अभी प्रवचन में नही आ रहे। या तो उन्हें प्रवचन में रस नहीं या हम प्रवचन में रसप्रद बाते नहीं कर रहे..' और उस वक्त मैंने उन सीमरन बहन की अनुमोदना की।

'उनके मन में क्या भाव है? क्या वे मुमुक्षु है?' यह जानने के लिए मैंने उन बहन को बुलाया। अपने भाई के साथ आई हुई उस बहन ने अपने जो भाव प्रकट किए, वे सचमुच आश्चर्यजनक व हर्षजनक थे। खुब खुब वंदना हो उन बहन के भावों को। चलो वार्तालाप द्वारा उनके भावो को जाने।

गुरु – आप मुमुक्षु हो ?

बहन – नहीं नहीं। मैं मुमुक्षु नहीं हुँ। मुझे तो अभी तक किसी साधु या साध्वीजी के साथ अंगत परिचय भी नहीं हुआ है। आज तक सिर्फ उनके वंदन ही किये है, बस......

गुरु – तो फिर आपने एक वर्ष में सिर्फ ७ ही कपडे की जोड पहनने का नियम कैसे लिया? क्या आपको नये नये कपडे पहनने का शौख नहीं ?

बहन – बहुत ही शौख है। मेरे पास 50 जोड ड्रेस है। इसके अलावा रिसेप्शन में जाने वक्त पहनने के 15 जोड कपडे है। सभी मिलाकर 65 जोड है। पहनने का शौख भी बहुत है।

गुरु – तो फिर यह तो बडी आश्चर्य की बात है कि आपने यह कठिन नियम का चढावा लिया। क्या यह नियम आप पाल सकोगे? आपका मन द्रढ रहेगा?

बहन – साहेबजी! हम पहले मुंबई में रहते थे, फिर साहुकारपेट में और यहाँ तो सिर्फ तीन महीने से ही आये हुए हैं।

ता. 18 रात को जब मुमुक्षु नीत भाई का यहाँ प्रवेश हुआ, तभी से मुझमे बहुत अच्छे भावों का संचार हुआ। **'19 वर्ष की युवानवय में यदि यह महान संयम व्रत ले** *का त्या***मैं क्यों नहीं?'** मेरे

अंदर भी कुछ करने के भाव उत्पन्न हुए। *'कम से कम इनकी दीक्षा तक तो रात्री भोजन का त्याग करुं'*... ऐसा संकल्प किया और मैंने रात्री भोजन का त्याग किया। मुझे यह इच्छा हुई कि इस दीक्षा का पूरा कार्यक्रम मैं अच्छी तरह से देखुं। इतने नजदीक से दीक्षा का प्रसंग मैंने कभी देखा नहीं, अनुभव किया नहीं है। इसीलिये मैने संकल्प किया।

उस प्रसंग पर आपने कपडा उपकरण वहोराने का महत्व समझाया कि 'साधु सिर्फ एक ही कपडा रखते है और फट जाने पर ही दूसरा कपडा वहोरते है।' तब मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। आपने तो यहाँ तक कहाँ कि 'हम लोग Extra एक भी कपडा नहीं रखते है और हमे यह भी डर नहीं कि अगर यह कपडा कभी अचानक फट भी जाए तब क्या करेंगे। 20 वर्ष के दीक्षा पर्याय में अभी तक ऐसी कोई परेशानी हुई नहीं है।' ये सभी बाते जानकर ही मुझे भाव आये कि *'मुझे तो सिर्फ एक वर्ष तक ही नियम पालना है।'* आप मुनि भगवंतो को पूरी जिंदगी तक की बाधा है। मुश्कील तो आपके लिये है, मेरे लिये नहीं, क्योंकि मुझे तो ७ जोड कपडो की छुट है।

गुरु – आप इस नियम को इतना सरल मान रहे हो, यह तो तुम्हारी बहुत बडी गुणवत्ता है, लेकिन यह नियम बहुत कठिन है। अरे! कई संयमी भी बहुत बडा परिग्रह रखते है...

बहन – साहेबजी! दीक्षा हुए पंद्रह दिन हो गए है, लेकिन मुझे तो तीसरी जोडी पहनने की इच्छा ही नहीं होती है। अभी पन्द्रह दिन तक सिर्फ दो ही जोड कपडो का उपयोग किया है। एक दिन छोडकर एक दिन दूसरी जोड उपयोग में ली है।

गुरु – क्या बात कह रही हो आप! क्या घर पर पापा मम्मी कुछ बोलते नहीं?

बहन – मम्मी ने कहा था कि 'जब 7 जोड कपडे पहनने की

बाधा है, तो फिर दूसरे 5 जोड भी पहनने ही चाहिए।' लेकिन मैने शांतता से ना कह दिया और मेरी हार्दिक इच्छा भी यही है कि **पूरा वर्ष सिर्फ 2 जोड ही उपयोग में लूं।** अगर कही भी प्रोग्राम में जाने की जरुरत हो, तो ही तीसरी जोड कपडे की इस्तेमाल करुं। अन्यथा सिर्फ दो ही कपडो का उपयोग हो।

गुरु – दीक्षा लेने की भावना होती है?

बहन – प्रवचन श्रवण करने से भावों में उत्साह तो आया ही है, लेकिन अभी तक दीक्षा के भाव नहीं आये है। जिस दिन यह भाव आयेगा, उस दिन दीक्षा भी जरुर लुंगी।

गुरु – क्या आप ग्रेज्युएट हो?

बहन – नहीं! बारहवी कक्षा तक अभ्यास करने के बाद जब कॉलेज जाने का वक्त आया, तब पापा गौतम भाई ने स्पष्ट शब्दों में मनाई कर दी। उन्हें पहले से ही कॉलेज का खराब माहोल पसंद नहीं है। इसलिए उनकी मनाई करने के बाद मैंने कालेज जाने की जीद नहीं की। इसके बदले दूसरे भी कई कोर्स का अध्ययन कर लिया। कम्प्युटर, कुकींग, डिजाइनींग आदि कोर्स सीख लिये।

गुरु – तो क्यो ग्रेज्युएशन के बिना चलेगा?

बहन – क्यों नहीं? दुनिया में करोडो लोग ग्रेज्युएशन के अलावा भी खुद की कला के आधार पर आगे बढ सकते है।

तो मैं क्युँ नहीं आगे बढ सकती हूं? और मुझे भी इस तरह के कॉलेज के अभ्यास से आगे बढने की इच्छा नहीं है।

गुरु – बाहर घूमने फिरने की इच्छा होती है?

बहन – पहले सहेलियों के साथ बाहर घूमने फिरने की इच्छा होती थी, लेकिन मेरे पापा इसका विरोध कर मुझे जाने नहीं देते थे। तब मैने इस चीज के लिए तीन चार बार पापा से झगडे भी किए थे। सामने जवाब भी दिया। गुस्सा भी किया। लेकिन पापा मेरी बात नहीं माने।

तब मैने ही 18 वर्ष की होने के बाद सोचा कि *'अगर मेरे पापा घूमने फिरने की इजाजत नहीं देते है, तो मुझे ही अपनी इच्छा छोड देनी चाहिए। आखिर मेरे पापा मेरे हित के लिए ही यह कहते है ना...'* और मैने भी अपनी इच्छा बदल दी और सोचा *'अगर घूमने फिरने नहीं जाउंगी तो मै पागल थोडी ना बन जाउंगी। अगर बार बार घूमने फिरने की इच्छा करुंगी तो इच्छा पूरी नहीं होने पर दुखी ही होउंगी।'*

इसके बाद बाहर घूमने फिरने की इच्छा ही छोड दी। कभी कभी परिवार के साथा घूमने जाने का होता है। वह भी वर्ष में सिर्फ पांच–छह दफा।

गुरु – मुझे यह बात पूछनी नहीं चाहिए फिर भी पूँछ लेता हूं कि आज के जमाने का वातावरण कैसा है यह तो आप भी जानते ही होंगे। सिनेमा, टीवी, मोबाइल, नेट जैसे साधनों द्वारा नई पेढी के संस्कार बिगड रहे है। हर कोई व्यक्ति के गर्लफ्रेंड या बॉय फ्रेंड होते ही है। लग्न के पहले की जिंदगी अलग तरह की और लग्न के बाद की जिंदगी अलग तरह की.... और इस बात का अफसोस भी नहीं... इस नये जमाने के भयानक समय में कहीं आप भी फंस तो नहीं गए ना?

आपको योग्य लगे तो ही इस सवाल का उत्तर देना। हाँ या ना में दोगे तो भी चलेगा। अगर जवाब नहीं भी दोंगे तो भी चलेगा।

बहन – हा साहेब जी! इस बात में मुझे भी मेरे खुदके बारे में आश्चर्य हो रहा है कि मुझे इन बातों में कभी इच्छा ही नहीं हुई कि किसी लडके से साथ बात करूं... उससे परिचय बढाउं या किसी लडके का आकर्षण हो। इन सभी बातों का मेरी २२ साल की उम्र में मुझे कुछ भी अनुभव हुआ ही नहीं है। यह सब बाते मुझे निम्न कोटी की लगती हैं। किस तरह से कॉलेज में लडकीयाँ इन सभी बातों में फंस जाती है... मुझे यह देखकर ही आश्चर्य होता है।

गुरु – इसका आशय यह कि आप आजन्म पवित्र हो? जन्मजात शुद्ध हो?

बहन – साहेबजी! मेरी ये बात शायद कोई नहीं मानेगा, शायद मेरी बात सुनकर किसी को यह भी लगेगा कि *'खुद को महान बताने के लिये झुठ बोल रही है और ढोंग कर रही है।'* लेकिन किसी दूसरे के मन की सोच को मैं कैसे रोक सकती हूँ? मैं सिर्फ खुद की बात करती हूँ कि मुझे आज तक कभी भी ऐसी बातों में खराब विचार आए ही नहीं हैं।

मैं भविष्य में दीक्षा न भी ले सकु और लग्न करुं, तो भी मेरी जिंदगी में बस सिर्फ एक ही पुरुष होगा... दूसरा कोई और नहीं नहीं नहीं....

बस उस दिन इतनी बातचीत हुई और उस बहन ने विदाई ली, लेकिन उनके हर एक शब्द में जो सच्चाई देखी वह मेरे ह्रदय को छु गई। मुझे यहीं लगा कि *'यह पुण्यात्मा ने पूर्वभव की विशिष्ट आराधना लेकर ही जन्म लिया है।'* किसी भी तरह विशेष निमित्तो के बिना ऐसा उत्कृष्ट वैराग्य इनमे कहा से आया? मुमुक्षुओं के लिये भी २ जोड कपडे से चलाना मुश्कील है, वैरागीयों के लिये भी इस तरह निर्विकारी होना आसान नहीं, जबकि इन बहन के पास शुद्ध विचारधारा है। तो यह बहन जरुर पूर्वभव के आराधक जीव ही होंगे।

* * * * *

ता ।. के आसपास यह बहन एक दिन वापस वंदन करने के लिए आए। थोडे उदास दिख रहे थे। कहा ''साहेबजी! मेरे पापा ने पूरे परिवार के साथ ता. १५ को राजस्थान जाने का तय किया है...'' और इतना कहने के बाद उनकी आखों से आंसु धारा बरसने लगी। मैंने पूछा ''इसमें रोने जैसी क्या बात है?''

कहने लगे ''मुझे आपका एक भी प्रवचन छोडने की इच्छा नहीं

है। मैं राजस्थान जाउंगी तो जिनवाणी श्रवण नहीं कर सकुंगी।'' तब मुझे ख्याल आया कि 'जिनवाणी श्रवण करने को नहीं मिलने से भी किसी को रोना आ सकता है और उसमे भी २२ वर्ष की उम्र वाली बहन को जो कि अभी अभी ही धर्म में जुडी है...'

''तो अब क्या करोगे?'' मैने पूछा।

''मैंने घर में झगडा किया और पापा को कहा कि 'आप सभी राजस्थान जाईये... मैं यहीं अकेली रहुंगी। नीचे मासी है, उनके वहां खाना खा लुंगी और मुझे खुद को भी खाना बनाना आता ही है'', लेकिन पापा नहीं माने। उन्होंने कहा कि ''वर्ष में एक ही बार राजस्थान जाते है और उसमें भी तुम साथ नहीं आओगी यह संभवित नहीं है। तेरी धर्म भावना देख कर मुझे खुशी है, लेकिन तुझे साथ लिये बिना हम जायेंगे ही नहीं।'' मैंने झगडा भी किया, नाराजगी भी जताई, लेकिन पापा नहीं माने।'' यह कहकर वे एकदम उदास हो गए।

मैने कहा ''मैं उन्हें समझाऊ?''

''नहीं साहेबजी! नहीं! आपको भी उंच नीच बोलेंगे तो मुझसे सहन नहीं होगा।''

''तो बस एक काम करो... ये दो मुमुक्षु नेहा-निधि बहन को घर पर वायणा करने के लिए ले जाओ। ये बात बात में तुम्हारें पापा को समझायेंगी।'' ये सब किया लेकिन रिजल्ट जिरो ही आया।

ता.14 को शाम को आखरी बार वंदन करने के लिये आए तो बहुत ही उदासीन थे जैसे कि बहुत कुछ खोकर जा रहे हो।

''राजस्थान जा रहे हो, तो वहां के लिए कपडों के ज्यादा जोड ले लिए है ना?'' मुझे वह प्रतिज्ञा याद आ जाने से मैने पूछा।

''नहीं साहेबजी! सिर्फ 3 जोड ही कपडो की लेकर जा रही हूँ।''

''लेकिन ऐसे कैसे चलेगा? वहां 18 दिन ठहरना है। 3 मार्च को

वापस आने वाले हो, तो 3 जोड में कैसे चलेगा? वहां राजस्थान में तो Extra कपडे शायद ही होंगे, यहां 65 जोड है ना?'' मैने पूछा।
''साहेबजी! इस बात की मुझे कोई चिंता नहीं। मैंने चालु 2 जोडी कपडों की और एक जोड पूजा के कपडों की साथ में ले ली है।''

सुनकर झटका लगा कि, 'यह तीसरी कपडो की जोड तो पूजा की है। यहाँ पर जो दो जोड कपडे पहनती है, वहीं दो जोड कपडे वहाॅ ।8 दिनों तक चलाएगी।

''अरे लेकिन वहाँ कोई कपडा फट गया तो?''

''साहेबजी! मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं है''... आनंदघन जी की तरह आत्म भक्ति में रहकर अपरिग्रह के अपूर्व कोटी के आनंद को अनुभवते सीमरन बहन मुझे सचमुच उत्तम कोटी के साध्वीजी की तरह लगे।

''हां देखो एक बात कहना मैं भूल गया कि 'जिन ७ जोड का चढावा आपने लिया है, वह 7 जोड चालु कपडों की समझना। पूजा और सामायिक की जोडे अलग से उपयोग कर सकते है। वह ७ जोडे में शामिल नहीं है।''

''नहीं साहेबजी! चढावा लेने वक्त मैने पूजा-सामायिक के कपडो की जोड इन 7 जोड के साथ ही गिनी है। यानि कि ५ जोड चालु कपडे की और 2 जोड पूजा-सामायिक की,'' उन्होंने सरल भाव से कहा।

लोग तो सामने से पूछ पूछ कर पूजा-सामायिक के कपडो की छुट लेते है, लेकिन यहां तो छुट दे रहा हूँ लेकिन बहन छुट लेने को तैयार नहीं थी।

''साहेबजी! जिंदगी में मुझे पहलीबार जैन शासन के प्रति प्रेम लगने लगा है। प्रवचनों में भी रस लग रहा है। जा तो रही हुं, लेकिन मन से नहीं। आउंगी 3 मार्च को.. तब आप जहाँ भी होंगे वहाँ वंदन

करने अवश्य आउंगी। रोज रोज आपके प्रवचन सुनने का मेरा सौभाग्य नहीं है, क्योंकि आप कहीं दूर भी हो सकते हो। और इसलिए रोज रोज आना मुश्कील है'', और उन्होंने आंसु भरी आँखों से भारी मन से विदाई ली।

हां। इनको जब मैंने पूछा कि ''तुम्हारा नाम सीमरन क्यों रखा? इस नाम का कोई अर्थ होता नहीं...'' तब उन्होंने कहा कि ''मेरा जन्म हुआ, उस समय 'दिलवाले दुल्हनीया ले जायेंगे' पिक्चर बहुत ही प्रसिद्ध हुई थी। उसमें मुख्य हिरोइन का नाम सीमरन था। इसलिए मेरे पापा ने मेरा नाम सीमरन रखा।''

अपवित्र जीवन जीने वाली हिरोइन का नाम जिनका रखा गया है वह बहन सती स्त्रीयों में अपना नंबर लगाने वालो में से हैं। तो फिर यह सीमरन नाम कैसे चल सकता है? इनके परिवार वाले भले इनका नाम जो भी रखे या जो भी बोले, लेकिन हम तो एक अच्छा सा सुंदर नाम रख सकते है। इनका स्वभाव सभी को **शाता** देने का है इस लिए हम उन्हें **शाता** के नाम से पहचान सकते है। हाँ! किसी को कोई दूसरा नाम पसंद आए तो मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

ता. 21.2.2018 को यह कथा पूर्ण कर रहा हुँ। ऐसे तो यह घटना बिल्कुल छोटी सी है, लेकिन इसकी कीमत बहुत बडी है।

* * * * *

संयमीयो के लिये विचार करने योग्य

1. 22 वर्ष की बहन सिर्फ दो कपडे जोड में पूरा वर्ष रह सकती हैं, तो क्या हम अपना परिग्रह कम नही कर सकते ? कितनी कामली, कपडा, पोटला, परिग्रह अपने पास है? इस बारे में आत्ममंथन करना आवश्यक है?

2. एक जोड फट जाए तो उसकी चिंता किए बिना ये बहन १५ दिन के लिए अपने गाँव गई है। लेकिन हमे कितनी चिंता है? अभी

कोई भी वस्तु लगभग 24 घंटे में मिल सकती है। तो फिर इतना परिग्रह रखने की क्या जरुरत है? अचानक कभी जरुरत पड जाये, तो भी इसकी चिंता करने की क्या जरुरत है?

3.ब्रह्मचर्य की पवित्रता संयमीयो में अच्छी होनी ही चाहिए।

संसारीयों के लिये विचार करने योग्य

1.धन्य है उन गौतमभाई को... जिन्होंने अपनी बेटी के **कैरियर की चिंता किये बिना उसके केरेक्टर** की चिंता की। कालेज में न भेजा व सिर्फ अपना परिवार छोड मित्रो के साथ भी घूमने फिरने नही भेजा। खुद विशेष धार्मिक प्रवृत्ति वाले न होने पर भी बेटी को धार्मिक काम में नहीं रोकी।

2. क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि 'हम भी फैशन के पीछे पागल नहीं बनेगे और मध्यम जीवन जीयेंगे। इससे खर्च भी कम होगा और पापा मम्मी को भी शांति मिलेगी। बचे हुए पैसे साधर्मिक सेवादि में खर्च करेंगे।'

3. लडकीयाँ क्या यह निर्णय लेंगी कि 'बॉय फ्रेंड रखने का पागलपन नहीं करेंगे। सिर्फ लडकीया ही हमारी दोस्त होंगी। अगर कोई लडका सामने से ऑफर भी करे तो भी हम नहीं फिसलेंगे और ऐसी हल्की कक्षा का अहंकार भी नहीं करेंगे कि *'मुझे तो सामने से इतने ऑफर आये।'* वेश्या, कुल्टा, भ्रष्ट होने जैसे ऑफर से खुश नही होना चाहिए। इतनी तो Common Sense लडकीयों के पास होनी ही चाहिए।'

4.क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि 'हम सिर्फ परिवार के साथ ही घूमने फिरने जायेंगे। किसी दूसरे के साथ नहीं । किसी लडकी के साथ घूमने जाने का बहाना बताके लडको के साथ फिरने नहीं जाएंगे। मम्मी पापा के साथ विश्वासघात नहीं करेंगे।'

5. क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि 'भले ही दीक्षा लेकर

महासती न बन सके, लेकिन कम से कम जीवन में सिर्फ मात्र एक ही पुरुष और वह भी लग्न के बाद ही... इतना भी पालन कर सती बनेंगे तो भी चलेगा।'

6. क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि .. 'हम माँ-बाप की बात अवश्य मानेंगे। जीद नहीं करेंगे और लग्न भी करना होगा, तो भी अंतिम निर्णय उनका ही रहेगा। किसी और का नहीं।'

7. क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि 'हररोज बहुत ज्यादा समय हम मोबाईल के पीछे बरबाद करते है, तो कम से कम कुछ समय तो प्रवचन सुनेंगे और कुछ समय धार्मिक पुस्तके पढेंगे।'

8. क्या लडकीयाँ यह निर्णय लेंगी कि 'हम दीक्षा के कार्यक्रम अवश्य देंखेंगे, उसमे उपस्थित जरुर रहेंगे। हर रोज प्रवचन न सुन सके तो भी कोई मुख्य प्रोग्राम, शिविर, वगैरह में तो जरुर जाएंगे। दिन में समय नहीं मिलने से सत्संग न कर सके, तो भी रात को समय निकाल के ५-१० मिनट साध्वीजी आदि का सत्संग जरुर करेंगे।'

घटना बहुत ही छोटी है..

घटना का पात्र भी बहुत ही छोटा है..

लेकिन इसके पीछे की भावनाए बहुत बडी है। हमे दीर्घदृष्टा बन कर इन भावनाओं की दिल से स्पर्शना करनी है।

* * * * *

सीमरन बहन की पीछे से सुनी हुई कतिपय विशिष्टताएंः

1. ता 22 जनवरी को चेन्नई में नीत कुमार की दीक्षा हुई । आज ६ मार्च को 45 दिन हुए। इन 45 दिन में उन्होंने अभी तक सिर्फ 3 जोड कपडे ही पहने है। राजस्थान लग्न में भी गए, लेकिन उन 15 दिनों में अपनी लाईफ स्टाईल में कुछ भी फर्क नहीं।

2. उनको पहले लीपस्टीक, स्क्रब, पावडर, विगेरे कॉस्मेटीक

साधनों का बहुत शोख था। लेकिन इन 45 दिनों में ये सभी वस्तुएं छोड दी है। अरे! याद भी नहीं की। लग्न में बहुत लोगों ने पूछा कि ''इस तरह शादी में थोडे ही आया जाता है।'' उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि ''मेरे लिये तो यह सब बराबर ही है।''

3. लोगों ने मम्मी-पापा को भी शिकायत की। ''तुम्हारी बेटी इस तरह कैसे रह सकती है?'' लेकिन माँ-बाप भी इसके ही पक्ष में है। वो भी कभी इस विषय में कुछ कहते नहीं। लोगों का सिर्फ यही धंधा है। खुद कुछ अच्छा करते नहीं और कोई दूसरे करते हो तो उन्हें गुमराह करते है। इस वजह से कितने ही लोग समाज के भय से धर्म नहीं कर सकते। **इस तरह समाज के लोग कितना पाप कर्म बाँध रहे है।**

4. सुबह का नाश्ता बंद। कभी भूख लगे तो सिर्फ बिना शक्कर का फिक्का दुध... दोपहर को रोटी-सब्जी, रोटी-दाल, भात-दाल कोई भी दो ही वस्तु और रात्रि भोजन का त्याग होने से शाम को साढे पांच बजे खाना खा लेना। खाने में भी दोपहर को जो २ वस्तु खाई है, वो ही दो वस्तु खा लेना।

बहन के यह शब्द, ''साहेबजी! घर में सभी रात को खाते है, लेकिन शाम को जो खाना बनता है वह सिर्फ मेरे ही लिये ही जल्दी बनाना पडता है। इसलिए मुझे यह उचित नहीं लगा। इसलिए दोपहर को जो भी दो वस्तुएँ खाने की बनती है, वो ही ज्यादा बना लेती हुँ और वो ही वस्तु शाम को खा लेती हुँ।''

मैने पूछा कि, ''दोपहर बारह बजे बनाई हुई रोटी-सब्जी ५ बजे चलती है?''

जवाब: ''हाँ... क्यों नहीं। जब यह युवान पूरा संसार छोड सकता है, यदि यह युवान (दीक्षार्थी) भोजन में कडु करियाता मिलाकर खा सकता है, तो फिर मैं क्यों नहीं ऐसा खाना खा

सकती ? मुझे तो सिर्फ ठंडा हो गया भोजन ही खाना है।''

मैंने पूछा: वापस गरम क्यो नहीं कर लेते ?

जवाब: किसलिये ? मुझे तो चलता है...

प्रश्न: यह सब वैराग्य पहले से ही था ?

जवाब: नहीं! यह दीक्षा देखने के बाद... इन मुमुक्षु नीत भाई का बहुत उपकार मानती हुं।

मै सोच ने लगा कि, *'उपधान में-संघ में आयंबिल खाते में-नव्वाणु में यदि हम को गरम वस्तु की अपेक्षा रहती है और इसलिए आधाकर्मादि दोष लगता हो, तो भी हम इस तरफ आँखे मुंद देते है। ठंडा हो तो ना कह देते है।*

अरे! ठंडा वापस गरम करने की बात तो दूर रही फिर से नया गरम बनाने का कह देते है। फिर संयमी हम है या यह बहन ?'

5. इन बहन ने बाधा नहीं ली, लेकिन मन से संकल्प किया है कि *'जहां तक बन सके रात को खाना नहीं।'* अभी अभी ही धर्म में जुडे है, इसलिये प्रतिज्ञा न भी ली हो, लेकिन इतना पक्का है कि इन ४५ दिनों में सिर्फ एक ही बार लग्न प्रसंग में रात को ७ बजे खाना पडा है। उस समय भी उन्होंने सिर्फ ३ वस्तु ही खाई।

मैं फिर सोचने लगा कि *'विहार धाम में रसाडे में दोषित लेना पडता है, बीमारी में व बुढापे में भी दोषित लेना पडता है, तब क्या इतनी जयणा हम नहीं पाल सकते ? कि दो तीन चार द्रव्य ही लेना, मीठाई नमकीन नहीं लेना ?'*

6. साबुन-शेम्पू का नियम तो नहीं लिया, लेकिन इच्छा ही मर गई है। मोह उतर गया है।

7. आज सुबह ही इन्होंने कई महत्व की बाते की।

''साहेबजी! आपने कल प्रवचन में कहा था कि 'नई पेढी को धर्ममार्ग में जोडना चाहिए।' उस बात से मुझे एक विचार आया है वह

आपको कहती हूं।

नई पेढी व्याख्यान सुनने नहीं आती इसलिये आप जो भी मम्मी-पापा-दादा-दादी व्याख्यान में आते है उन्हें भार पूर्वक इतनी प्रेरणा करो कि 'आप घर जाओ तब परिवार के आगे व्याख्यान की अच्छी बाते कहो। कोई ऐसे नये धार्मिक प्रसंग भी कहो जिससे उन्हे इन बातो में Interest आये।'

आप उन मातादिको समझाओ कि 'तुम अपने संतानो के भविष्य की कितनी चिंता करते हो। उनकी वर्षो के बाद होने वाली शादी के विमा वगेरे सब कुछ बनाते हो, **तो फिर उनके परलोक की चिंता क्यो नहीं करते?** इसमे तो एक पैसा भी देने का नही है।'

8. बिन्नी संघने कल इनका बहुमान किया। आज उन्हे पूछने से मालुम हुआ कि 'यहाँ कुछ श्रावक बहुत सुंदर काम करते है। जिनको धार्मिक पुस्तके चाहिए उन्हें फ्री में पहुंचाते है। मैने मेरे बहुमान के 1000 रूपए और मेरे अपने 1000 मिलाकर 2000 इस काम के लिए दे दिये। ऐसी भी मेरी इच्छा थी कि एक वर्ष में मेरे पास जितने रूपए एकत्र हो व सभी दीक्षार्थी परिवार को दे देना... लेकिन साहेबजी! बाद में विचार आया कि *'एक वर्ष तक इंतजार क्यों करना? इसके बदले आज की सुकृत कर लूं'* और मैने यह लाभ ले लिया।'

इन्होंने एक काल्पनिक कहानी बनाई है कि

'एक गर्भवती हरणी नदी के पास खडी है। अचानक से उसे ख्याल आया कि 'मेरे पीछे शिकारी खडा है, मेरे एक आगे आग लगी है, मेरी एक तरफ नदी है, मेरे दूसरे तरफ सिंह आया हुआ है। तो मुझे क्या करना?

ऐसे तो मैं मर जाउंगी, लेकिन उसने तुरंत एक निर्णय ले लिया। 'अभी प्रसूति का समय हो गया है। बच्चे को जन्म देना मेरा पहला कर्तव्य है। बाकी बाद में सोंचेंगे।'

उसने बच्चे को जन्म देने की मन में ठान ली। इस तरफ

शिकारी ने सिंह के भय से पहले सिंह को मारा। उधर भडकी हुई आग ने शिकारी को जला दिया।

दूसरी तरफ नदी के पानी ने आग को बुझा दिया। इस तरह हरणी अपने बच्चे के साथ बच गई।'

ये बहन अपने मन की सोच कह रही है कि '**कई बार भविष्य के बारे में बहुत ज्यादा सोच कर अपना वर्तमान भी हम बिगाड देते है। इसके बदले अभी अपना वर्तमान ही संभाल ले तो भविष्य के रास्ते अपने आप निकल जायेंगे।**'

उस वक्त मुझे आचारांग सूत्र का वचन याद आया '**खणं जाणाहि पंडिए।**'

वे यही बात बता रहे थे कि जो वर्तमान क्षण को जानता है और उसे जीवन में उतारता है वो ही पंडित है।

10. सिर्फ 45 दिन से ही धर्म में जुडी हुए इन्होंने दो प्रतिक्रमण-जीव विचार के अर्थ याद कर लिये है। अभी नवतत्व का अभ्यास पू. सा. अक्षयप्रज्ञा श्रीजी के पास शुरु करने वाले है। इस बहन का नाम बदलने जैसा लगा, क्योंकि सीमरन तो फिल्मों में हिरोईन का नाम था, लेकिन ये तो गुणों से भरी हुई श्राविका है। कदाचित आगे भविष्य में मुमुक्षु और साध्वीजी भी बन सकती है।

साध्वीजी ने इनके सुंदर नाम बताये हैं।

इनका स्वभाव लज्जालु (शरमाल) होने से **शरम**।

नये जमाने के होते हुए भी बहुत सी मर्यादाओं को अपनाने वाले होने से **सीमंधरा**।

राजस्थानीओं में धर्म करने की छुट तो दे देते है, लेकिन दीक्षा की सहमति बेटी के लिये भी जल्दी नही देते है। ऐसा मुझे दक्षिण भारत का बहुत कुछ अनुभव है।

हम प्रभु के पास प्रार्थना करते है कि ऐसी उत्तम आत्मा को

1. दीक्षा की भावना हो...

2. भाव मजबुत हो

3. परिवार सहमति दे..

4. इनका कल्याण कर सके ऐसे उत्तम गुरू मिले...

5. आचार के सुंदर पालण के साथ अध्यात्म की साधना मिले..

हो सके उतना जल्दी मोक्ष मिले...

हालाँकि यह प्रार्थना तो सभी प्राणीयो के लिये करनी चाहिए, लेकिन इनकी विशेष पात्रता को देखते हुए इनके लिये बहुत कुछ करने का मन हो ही जाता है... यह बिल्कुल सीधी सरल बात है।

तुम्हारे आसपास बहुत नजदीक में ऐसी बहुत सी व्यक्तियां होंगे ही। उनके लिये तुम्हारी दृष्टि उदार, गुणवाहक बनानी होगी। उनमे दोष देखना छोडना होगा।

'यह म. सा. सबकुछ बढा चढा के लिखते है' इस तरह के मैले-हल्के विचार छोडने ही होंगे। तो तुम्हे भी आत्म पहेलीओ के दर्शन होंगे।

गंदगी से भरी हुई जगह व बगीचा दोनो ही तुम्हारे समक्ष है।

'कहा जाना? क्या सुंघना? क्या देखना?' यह भी तुम्हारे हाथों में है...

'**सुअर** के संस्कार दृढ करने है? या **देवके**?' यह सब आपको ही देखना है।

मैं तो यह कथा लिखकर कृतार्थ हो गया।

॥ अर्हं नमः ॥

॥ नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय ॥

NEW ARRIVALS

Abortion के कातील
पाप से पूरा विश्व व्याप्त हो चुका है...

Amercia जैसे राष्ट्र भी
अब इससे पीछे फिर रहे है...

अब समय आ गया है
जगने का...

एक बार पढ़ लिजीए इस पुस्तिका को....
आपका मन जरूर बदनलेगा

(यह पुस्तिका English-हिन्दी-गुजराती
तीनो भाषाओं में उपलब्ध है।)

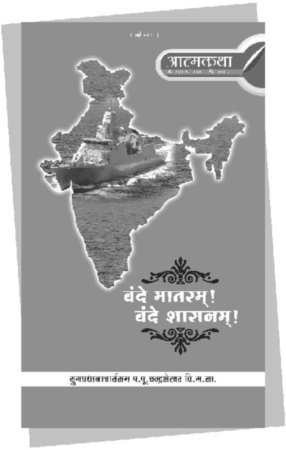

भारत के नौकादल की एक
TANK-CARRIER जहाज.... !

इस जहाज पर चीफ इंजीनियर की
भूमिका को अदा करनेवाले,

'यतो धर्मः, ततो जयः' के सूत्र को
खुद के जीवन में चरितार्थ करनेवाले

देश के लिए खुद के जीवन को समर्पित करनेवाले,

हिंसा और अहिंसा दोनो एक साथ रह सकती
इस हकीकत को बयान करनेवाले

एक नौजवान, ज्ञानवान नौकासैनिक की यह जीवन गाथा है,

'व्यक्ति सिर्फ जन्म से जैन नहीं होता, कर्म से जैन होता है...'
यह सच्चाई मानने पर मजबूर कर दे वैसी पहेलीवाली
यह जीवनगाथा है...

'देश रक्षा के साथ धर्मरक्षा' के यज्ञ को खुद के जीवन
में परोनेवाले उस नौसैनिक को करोड़ो सलाम... !

प्रभु वीर के जन्म कल्याणक का उत्सव

यदि भगवान की आज्ञा के अनुसार मनाया जाये,

तो महोत्सव है,

यदि भगवान की आज्ञा की अपेक्षा करके मनाया जाय,

अपने मन की इच्छाओं के अनुसार मनाया जाय.

तो वो मोहोत्सव है,

मोह का= अज्ञान का= जडता का उत्सव है।

हम सब जैन है, जिनेश्वरदेव की आज्ञा को

यथाशक्ति पालने वाले है...

श्री जिनशासन

में प्रवेश पाने की

प्राथमिक पात्रता याने

सम्यग्दर्शन का स्वीकार

याने मान्यता को साफ करना +

कायम रखना + मजबूत बनाना

सम्यग्दर्शन =

Clarity of vision
Purity of belief
Surety of faith

हो जाओ तैयार सम्यगदर्शन को पाने के लिए!

श्रुत
Messenger

प.पू.गुरुदेव गिरिविहार प्रेरक
श्री हेमप्रभसूरीजी म.सा. के शिष्य
प.पू.आचार्य
श्री उदयप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
हमारे परिवार के उपकारी

श्री वादलीबाई रुपराजजी शेठ
(जालोर)

Rajendra Guru Developers (PVT) Ltd.

कथा CLASSIC SERIES

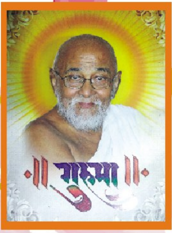

गुरु माँ

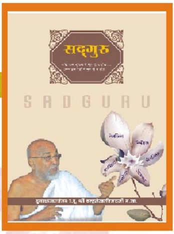

सद्गुरु

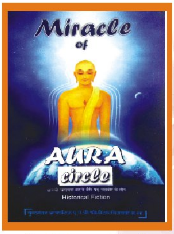

Miracle

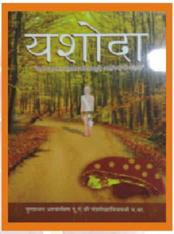

यशोदा

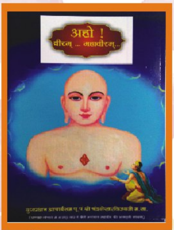

अहोवीरं

दक्षिण भारत

चेन्नई के चमकते सितारे

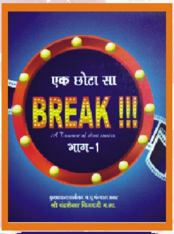

एक छोटा-सा ब्रेक

गुरु के सम्पर्क में आने से बहुतों का परिवर्तन संभव है

परंतु,

गुरु के सम्पर्क के बिना भी परिवर्तन लानेवाने

बहुत चंद मिलते है...

उम्र सिर्फ 22 की... !

परंतु,

साधु-साध्वीओ को भी आत्ममंथन करने पर मजबुर

कर दे वैसी निर्मलता...

वैसी दृढ़ता,

कथा छोटी...

कथा का पात्र छोटा..

परंतु... ??

व्यक्तित्व अति बड़ा!...

सज्ज हो जाओ!..

गुणो को ग्रहण कर, गुणों को उतारने के लिए...

मर्यादापुरुषोत्तमाय नमः

आत्मकथा ADVENTURE SERIES

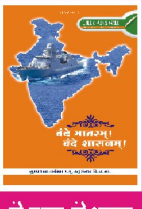

वंदे मातरत्-वंदे शासनम्

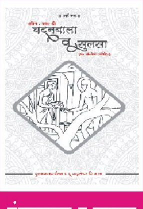

चंदनबाला व सुलसा

आत्मकथा - 1

आत्मकथा - 2

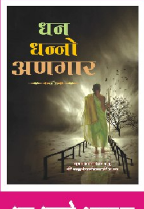

धन धन्नो अणगार

044-49580318 / 9884232891